महाकवि कालिदास की रचनाओं में जीवन दर्शन

डॉ0 सावित्री सिंह*

कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। शब्द–सृष्टि के अपूर्व सर्जक होने के कारण कवि कुलगुरू की उपाधि से विभूषित हैं, इनके काव्य–ग्रन्थों में 'नवनवोन्मेषशालिनी' प्रतिभा सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। महाकवि कालिदास में भावप्रवणता, रसमर्मज्ञता, शब्दशक्तता और रचना प्रौढ़ता के चारों गुण सन्तुलित रूप से विद्यमान हैं । इनकी प्रज्ञा स्थूल से सूक्ष्म की ओर, शरीर से आत्मा की ओर, चिन्तन से मनन की ओर अग्रसर होती है। अन्तर्मेदिनी दृष्टि से प्रत्येक उपमान का साक्षात्कार कर इन्होंने भावों को विगलित करने का सफल प्रयास किया है। प्रकृति के मनोरम व्यापारों द्वारा प्रस्तुत को रूपायित करने की कला में कालिदास सर्वाधिक निपुण है। रसानुकूल शब्द–प्रयोग के कारण नाद–सौन्दर्य भी इनकी कविता में अनेक स्थलों पर पाठकों को कुछ क्षण तक रूकने के लिए बाध्य करता है। किसी पुरातन कवि ने कालिदास का मूल्यांकन करते हुए लिखा है – 'जब सच्चे कवियों की गणना करने लगता हूँ तो कनीनिका – सबसे छोटी अँगुली पर पहला नाम कालिदास आता है, दूसरी जो अनामिका नामक अँगुली है, उस पर कोई नाम सूझता ही नहीं, क्योंकि आज तक उनकी समकक्षता करने वाला कोई दूसरा कवि हुआ ही नहीं। अतः ऐसा मालूम पड़ता है कि दूसरी अँगूली का नाम अनामिका सार्थक है :–

पुरा कवीनां गणनाप्रसंगे कनिष्ठिकाऽधिष्टितकालिदासा ।

अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव ।।

किसी देश और जाति के आदर्शों का प्रतिबिम्ब उसके प्रतिनिधि साहित्य में परिलक्षित होता है। उसी प्रकार किसी कवि या लेखन की रचनाओं में उसके जीवन–दर्शन का प्रतिबिम्ब संक्रान्त रहता है। यदि हम कालिदास के काव्यों का अध्ययन करें, तो कालिदास का जीवन के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाता है। मनुष्य जीवन की सतरंगी रहस्यानुभूतियाँ सुगन्धित पुष्प बनकर कवि के रचना–संसार को सुवासित करती रही हैं। कवि साहित्यालोक की प्रत्येक रश्मियों में जीवन–दर्षन प्रतिभासित होता रहा है। क्योंकि जीवन दर्षन सिद्धान्त एवं व्यवहार के मंच पर जीवन के सर्वविध अनुषीलन एवं पर्यालोचन से उभरी हुई उसकी रहस्य–विच्छित्ति की अभिव्यञ्जना का ही नाम है।

'रघुवंष–महाकाव्यम्' में अपनी दिवङ्गता पत्नी इन्दुमती के चिर विरह से कातर एवं करूणाक्रन्दन करते हुए अज को धैर्य बँधाते हुए महर्षि वषिष्ठ जीवन एवं मृत्यु को बड़ी गम्भीरता के साथ परिभाषित करते हैं। मृत्यु शरीरधारियों का स्वभाव है। जीवन तो एक विकार है। अतः प्राणी जितने क्षण तक साँस लेते हुए स्थिर रह जाय, उतने से ही उसे लाभवान् समझना चाहिए।

मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवनमुच्यते बुधैः ।

क्षणमप्यवतिष्ठते श्वसन् यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ ।। रघुवंशम् 8.87

उपर्युक्त श्लोक में जीवन को विकृति एवं विकृति को क्षणभङ्गुर मानकर मृत्यु के समक्ष जीवन को नगण्य एवं अल्पकालिक प्रतिपादित किया गया है। यह प्रतिपादन महाकवि कालिदास की जीवन–विषयिणी मान्यता को स्पष्ट करता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे उन्हें जीवन की न्यूनता एवं मृत्यु की वरीयता अनुभूत है। जीवन अस्थिर एवं नष्वर है, मृत्यु शाष्वत एवं सत्य है। इन्दुमती का जीवन तो पुष्प–माला की चोट से समाप्त हो गया था। अज का यह विलाप कितने गम्भीर दर्षन को उद्भावित करता है यथा –

* एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम (बिहार)

Scanned by CamScanner

कुसुमान्यपि गात्रसङ्गमात्प्रभवन्त्यायुरपोहितुं यदि ।

न भविष्यति हन्त साधनं किमिवान्यत् प्रहरिष्यतो विधेः ।।

आश्चर्य, विस्मय एवं दुःख को एक पल में उभार देने वाले जीवन के इन्हीं विचित्र स्पन्दनों एवं पर्यवसानों ने महाकवि को उसे विकृति मान लेने को विवष कर दिया था, जो उनके ग्रन्थों में तर्कों के प्रायोगिक मंचों पर सर्वथा अभिप्रमाणित हो गया था।

कालिदास के काव्यों के पर्यालोचन से विदित होता है कि कालिदास का ऐहिक जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण था। उसने सम्भवतः कभी दारिद्रय एवं निराशा का मुख नहीं देखा था, इसलिये उसके काव्यों में कहीं भी हीनता तथा विवषता की झलक नहीं दीख पड़ती है।

कालिदास मानवीय भावनाओं के कवि हैं, उन्होंने दिव्य चरितों को भी मानवीय दृष्टिकोण से देखा हैं। उनके देव और यक्ष भी मानवीय भावनाओं से ओत–प्रोत हैं। देवतात्मा हिमालय, देवाधिदेव षिव, कुबेर का सेवक यक्ष, सब ही विभिन्न परिस्थितियों में मानव के समान ही चेष्टा एवं व्यवहार करते हैं। कालिदास का विश्वास हैं कि वर्णाश्रम धर्म का पालन करके पुण्य–कर्मों के प्रताप से मानव देव बन जाता है और पुण्य कर्मों की समाप्ति पर देव भी पार्थिव शरीर धारण करते हैं। कालिदास के देव और मानव में आतंकित करने वाला अन्तर नहीं है। अभिज्ञान–शकुन्तलम का नायक दुष्यन्त इन्द्र के शत्रुओं का संहार करने स्वर्ग जाता है और उसकी प्रेयसी शकुन्तला परित्यक्तावस्था में देवों के पिता मारीच कष्यप के आश्रम में रहकर अपने पुत्र का पालन करती हैं। कालिदास के अनुसार इक्ष्वाकु–वंषी राजाओं का रथ स्वर्ग तक पहुँचता था। उसके मत में वैभव–सम्पन्न राज्य का स्वर्ग से केवल पृथ्वी को स्पर्ष करने मात्र का अन्तर है। कालिदास की देव और मानव की निकटता सम्बन्धी मान्यता पर स्पष्ट रूप से पौराणिक धर्म का प्रभाव है।

अभिज्ञानशांकुतल के प्रथम अंक में राजा दुष्यन्त के माध्यम से कालिदास से कृत्रिम सौन्दर्य की अपेक्षा प्राकृतिक सुन्दरता को सराहा है और उसकी प्रशंसा की है –

शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुराश्रमवासिनो यदि जनस्य

दूरीकृताः खलु गुणैरूद्यानलता वनलताभिः ।।15।।

आश्रम की तपस्वि कन्याओं की सुन्दरता को देखकर दुष्यन्त सोचते हैं कि ऐसा सौन्दर्य अन्तःपुर में भी दुर्लभ है, निश्चय हीं वन की लताओं ने अपने गुणों और सौन्दर्य से वाटिका की लताओं को तिरस्कृत कर दिया।

कालिदास मुख्य रूप से ऐन्द्रियिक वासना–जन्य प्रेम, भोग–विलास तथा वैभव के गायक कवि हैं। उनके नायक तथा नायिका प्रथम दर्षन में सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाते हैं। फिर भी कालिदास ने जिस प्रेम और आकर्षण का चित्रण किया है, वह केवल पार्थिव सौन्दर्य पर आधारित नहीं है। यह प्रेम को आध्यात्मिक प्रेम का दिव्य कुन्दन बनने के लिए विरह–वेदना अग्नि परीक्षा में से निकलना पड़ता है। कालिदास के अनुसार रमणिक मधुर वस्तु की आकर्षण–षक्ति का मूल जन्म–जन्मान्तर का संचित सौहार्द है।

कालिदास ने अपने नायकों के चरित्र द्वारा जिस आदर्श को प्रस्तुत किया है, वह उनके युग की चेतना के सर्वथा अनुरूप है। कालिदास धर्म के प्रबल पोषक थे एवं वर्णाश्रम धर्म में उनकी प्रबल निष्ठा थी। वन में प्रवेष करके मधुर–दर्षन मुग्ध तपस्वी कन्या के सौन्दर्य पर मुग्ध हुआ दुष्यन्त इस चिन्ता में है कि यदि शकुन्तला कुलपति कण्व की असवर्ण पत्नी में उत्पन्न हो तो कैसा अच्छा हो। कालिदास ने राजा दुष्यन्त को तभी आश्वस्त दिखलाया है जब उसे यह पता चल जाता है कि शकुन्तला मेनका में उत्पन्न राजर्षि कौषिक की पुत्री है, ब्राम्हण कण्व की नहीं –

Scanned by CamScanner